25/06/2021 B.A Hons Part I Paper I

Date
Page 1-04

Question – समाजशास्त्र तथा राजनीति शास्त्र में संबंध की व्याख्या कीजिए।

अथवा

समाजशास्त्र तथा राजनीति शास्त्र में समानताएँ तथा भिन्नताएँ बताइए।

Ans → समाजशास्त्र तथा राजनीतिशास्त्र एक दूसरे से घनिष्ठ रूप से संबंधित है। यही कारण है कि मॉरिस गिंसबर्ग ने कहा है कि "ऐतिहासिक दृष्टि से समाजशास्त्र की मुख्य जड़ें राजनीति एवं इतिहास दर्शन में हैं।" समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण के अभाव में राजनीतिशास्त्र का अध्ययन अधूरा ही रहेगा। बार्न्स के अनुसार "समाजशास्त्र तथा आधुनिक राजनीतिशास्त्र के विषय में सर्वाधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि पिछले कई दशकों में राजनीतिक सिद्धांत में जो परिवर्तन हुए हैं वे सभी समाजशास्त्र द्वारा अंकित तथा सुझाए गए विकास के अनुसार ही हुए हैं।"

समाजशास्त्र तथा राजनीतिशास्त्र में समानता:–

(i) समाजशास्त्र तथा राजनीतिशास्त्र दोनों ही समाज में मनुष्य के व्यवहार तथा गतिविधियों का अध्ययन करते हैं। प्रसिद्ध विद्वान अरस्तू के अनुसार "मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है।"

(ii) सामाजिक जीवन तथा राजनीतिक जीवन एक दूसरे से अत्याधिक जुड़े हुए हैं। जी० ई० जी० कैटलिन के अनुसार "राजनीतिक शास्त्र तथा समाजशास्त्र एक ही आकृति के दो रूप हैं। इसी तथ्य को स्पष्ट करते हुए एफ० जी० विल्सन ने कहा है कि

"यह अवश्य स्वीकार कर लेना चाहिए कि आम तौर पर यह फैसला करना कठिन हो जाता है कि विशिष्ट लेखक को समाजशास्त्री, राजनीतिशास्त्री या दर्शनशास्त्री क्या मान जाय?

(iii) समाजशास्त्रीय संस्थाएँ राजनीतिक संस्थाओं के स्वरूप तथा प्रकृति समाज के स्वरूप तथा प्रकृति से निर्धारित होते हैं। गिडिंग्स के अनुसार "जिस व्यक्ति को पहले समाजशास्त्र के मूल सिद्धान्तों का ज्ञान न हो उसे राज्य के सिद्धांत की शिक्षा देना वैसा ही है, जैसे न्यूटन के गति सिद्धान्त को न जानने वाले को खगोलशास्त्र या ऊष्मा विज्ञान की शिक्षा देना।"

(iv) मनुष्य के सामाजिक तथा राजनीतिक जीवन में अत्यधिक पारस्परिकता तथा अंत निर्भरता पायी जाती है। दोनों ही एक दूसरे पर प्रभाव डालते हैं। प्रसिद्ध विद्वान गिंसबर्ग के अनुसार यह कहा जा सकता है कि समाजशास्त्र की उत्पत्ति राज्य के अतिरिक्त अन्य संस्थाओं के अध्ययन हेतु राजनीतिक अन्वेषणों के क्षेत्र में विकास के परिणामस्वरूप हुई। उदाहरणों के लिए परिवार या सम्पत्ति के स्वरूप और संस्कृति और सभ्यता के अन्य तत्व जैसे आचार, धर्म और कला

में सामाजिक उपज माने जाते हैं तथा एक दूसरे के संदर्भ में इनका अवलोकन किया जाता है।

समाजशास्त्र तथा राजनीति शास्त्र में भिन्नतायें अथवा अन्तर —

(i) समाजशास्त्र का क्षेत्र तथा दृष्टिकोण राजनीतिशास्त्र की अपेक्षा अधिक व्यापक तथा विस्तृत है। समाजशास्त्र में सभी सामाजिक संस्थाओं का अध्ययन किया जाता है जबकि राजनीति शास्त्र में राज्य तथा सरकार के संगठन का ही अध्ययन किया जाता है। गार्नर के अनुसार " राजनीतिशास्त्र मानव समुदाय के केवल एक रूप राज्य से संबंधित है, समाजशास्त्र मानव समुदाय के सभी रूपों से संबंधित है।"

(ii) समाजशास्त्र के द्वारा जीवन के सामान्य पक्षों का अध्ययन किया जाता है जबकि राजनीतिशास्त्र जीवन के एक विशिष्ट पक्ष का अध्ययन करता है। गिलक्राइस्ट के अनुसार "समाजशास्त्र मनुष्य का सामाजिक प्राणी के रूप में अध्ययन करता है। चूंकि राजनीतिक संगठन सामाजिक संगठन का एक विशेष स्वरूप होता है, अतः राजनीति शास्त्र समाजशास्त्र की अपेक्षा अधिक विशिष्ट शास्त्र है।"

(iii) समाजशास्त्र का दृष्टिकोण समग्र है तथा यह चेतन व अचेतन दोनों ही अवस्थाओं का अध्ययन करता है जबकि राजनीतिशास्त्र का दृष्टिकोण एक पक्षीय है तथा यह केवल चेतन अवस्था का ही अध्ययन करता है।

(iv) समाजशास्त्रीय अध्ययन तथा ज्ञान जीवन के समस्त क्षेत्रों के लिए लाभदायक है जबकि राजनीतिशास्त्र का ज्ञान केवल राजनीति के लिए लाभदायक है।

(v) समाजशास्त्र के अन्तर्गत सामाजिक संगठन तथा विघटन की अस्थायी प्रक्रियाओं का अध्ययन किया जाता है जबकि राजनीति शास्त्र में मुख्य रूप से राज्य तथा सरकार का अध्ययन किया जाता है जो मूल रूप से संगठित संस्थाएँ हैं।

अतः गिलक्राइस्ट के शब्दों में हम कह सकते हैं कि "दोनों विज्ञानों की वास्तविक सीमाएँ अनमनीय रूप से परिभाषित नहीं की जा सकती। वे कभी-कभी एक दूसरे की सीमाओं का अतिक्रमण करती हैं लेकिन दोनों के बीच एक स्पष्ट सामान्य भेद है।"

25/06/2021

DR. Vikram Kr Mishra
Asst Professor
Guest Faculty
Part Time
Dept of Sociology